डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर : वर्ण एवं जाति व्यवस्था तथा बौद्धवाद

वर्ण एवं जाति व्यवस्था - वैदिक संस्कृति की देन है। वैदिक युग में सम्पूर्ण समाज चार वर्णों में विभाजित था - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वर्ण का आधार वैदिक काल में कर्म हुआ करता था पर वैदिकोत्तर काल से वर्ण का आधार कर्म नहीं बल्कि जन्म होने लगा और जन्म से जाति एवं कार्य का निर्धारण होने लगा जो एक अभिशाप के रूप में सामने आया। यही व्यवस्था आज भी विद्यमान है। डा. अम्बेडकर इस व्यवस्था के विरोधी थे।

- अम्बेडकर के अनुसार जातिवाद से कार्य क्षमता नहीं बढ़ती क्योंकि मनुष्य को इच्छानुसार काम नहीं मिलता। उन्होंने कहा "जाति प्रथा को नष्ट करने का एक ही मार्ग है अन्तर्जातीय विवाह न कि सहभोज, खून का मिलना ही अपनेपन की भावना ला सकता है।"
- अम्बेडकर जाति प्रथा को हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी खराबी मानते थे।
- उन्होंने मनुस्मृति की काफी आलोचना की तथा उस पर आरोप लगाया कि मनुस्मृति ने अछूतों का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक शोषण करके उन्हें दासता दी है।
- अम्बेडकर ने मन्दिरों में पुजारी पद को प्रजातांत्रिक बनाये जाने का सुझाव दिया।
- उन्होंने भारत में दलितों की मुक्ति के लिए वही कार्य किया जो कार्य अब्राहिम लिंकन ने दासों की मुक्ति के लिए नेलशन मंडेला ने काले लोगों के लिए और पॉल राबसन ने अमरीका के नीग्रो लोगों की मुक्ति के लिए किया था।
- नव्य - बौद्धवाद -
- अम्बेडकर मनुवादी व्यवस्था का विरोध कर हिन्दू धर्म के कर्मकाण्डी व्यवस्था का विरोध किए हैं। तथा बौद्ध धर्म के आधारभूत मूल्यों, नैतिकता, पंचशील, त्रिरत्न, मैत्री, करुणा सर्वमुक्ति आदि को स्वीकार करते हुए मानव जीवन को सुधारने के लिए महत्वपूर्ण माना है।